सुजीवन

9

राष्ट्रीय सहारा, लखनऊ, सोमवार, 3 सितम्बर, 2007

होम्योपैथी बढ़ाए गुर्दे की क्षमता

डा. सुरभि खान्ना

शरीर के महत्वपूर्ण अंगों में से एक है गुर्दा। गुर्दे को ईश्वर का वरदान भी कहा जाता है। ये रक्त से विषैले तत्व अनावश्यक भाग्यों को छान कर मूत्र के रूप में शरीर से बाहर निकालते हैं। डा.सुरभि खन्ना होम्योपैथ (सीतापुरवाले) गुर्दे का एक रोचक तथ्य है जिसमें पीड़ित गुर्दे भी काफी समय तक सामान्य है। इसमें कोशिकाओं के लगभग 75 प्रतिशत भाग खराब हो जाते हैं तथा मूत्र परीक्षण में भी सामान्य रिपोर्ट्स ही प्राप्त होती हैं। गुर्दे की काफी समस्या में आधुनिक चिकित्सा में केवल डायलिसिस करवाना सिखाया जाता है।

डा.सुरभि खन्ना, बी.एच.एम.एस. मुख्यतः क्रॉनिक रेनल फेलियर, रक्त कोशिकाओं के नष्ट हो जाने एवं इसके और कारण समस्या होने वाली रोगों से हो सकता है। रीनल फेलियर जो, आर.एफ., सामान्य मूत्र प्रवाह में किसी भी प्रकार की बाधा आने से हो सकता है तथा रीनल फेलियर, गुर्दे के फेलियर यानि कार्यक्षमता 25 प्रतिशत से कम हो जाना है। रेनो-वास्कुलिटिक ग्लोमेरुलो, इन्फ्लामेटरी ग्लोमेरुलोनेफ्रिटिस, गुर्दे की सिस्टमेटिक गुर्दाई बिमारी का रोग, किडनी में स्टोन, गुर्दे की इन्फेक्शन या ब्लॉकेज होना तथा जेनेटिक कारणों का होना।

लक्षण-रक्तचाप बढ़ना, पेशाब में पैरों में सूजन, जी मिचलाना, उल्टी आना, मूत्र न आना, कमजोरी, रक्त अल्पता, शरीर सूजना, शरीरिक दोष।

निदान-रक्त में क्रेटिन यूरिया क्रियेटिनाइन का स्तर, अल्ट्रासोनोग्राफ द्वारा किडनी का आकार, पार्श्वस्थलीनिडोग्राम की द्वारा जांच, से किडनी की कार्य क्षमता का पता लगाया है। सोनोग्राफी द्वारा भी बी.आर.एच. के निदान में सहायक सी जा सकती है।

इलाज- पारंपरिक चिकित्सा पद्धति में गुर्दे के खराब हो जाने पर उसे बदलने का ही एक मात्र विकल्प उपलब्ध है डायलिसिस एवं गुर्दा प्रत्यारोपण ही इसका निदान है।

होम्योपैथिक चिकित्सा-

होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में कई प्रभावी औषधियां उपलब्ध हैं जो गुर्दे की जो सही क्षति को स्थिर कर सकती है